Downloaded from www.studiestoday.com

पाठ का नाम - दुःख का अधिकार

लिखित

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (25-30 शब्दों में) लिखिए -

प्रश्न 1. मनुष्य के जीवन में पोशाक का क्या महत्व है?

उत्तर - मनुष्य के जीवन में पोशाक की अहम भूमिका होती है। मनुष्य की पहचान पोशाक से ही होती है। यह हमें समाज में अधिकार दिलाती है तथा दर्जा निश्चित करती है। यह मनुष्यों को विभिन्न श्रेणियों में बाँट देती है। भेद-भाव उत्पन्न कराती है तथा हमारे लिए अनेक बंद दरवाजे खोल भी देती है।

प्रश्न 2. पोशाक हमारे लिए कब बंधन और अड़चन बन जाती है?

उत्तर - बहुमूल्य पोशाक हमें नीचे झुककर समाज की निचली श्रेणियों की अनुभूति को समझने में बंधन व अड़चन बन जाती है। क्योंकि यह हमें अभिजात वर्ग व अमीरी का बोध कराती है। मानव - मानव में दूरियाँ बढ़ाने का काम करती है। इस प्रकार विषम परिस्थितियों में हमारी पोशाक हमें नीचे झुकने से रोके रखती है।

प्रश्न 3. लेखक उस स्त्री के रोने का कारण क्यों नहीं जान पाया?

उत्तर - लेखक भी एक संवेदनशील प्राणी था। जब उसने उस खरबूजे बेचनेवाली स्त्री को घुटनों पर सिर रखकर रोते देखा और बाजार में खड़े लोगों का उस स्त्री के संबंध में घृणापूर्ण बातें करते देखा तो उसका मन भी दुःखी हो उठा। वह भी उस स्त्री के दुःख के कारण को जानना चाहा। परन्तु उसकी कीमती पोशाक उसमें रुकावट बन गई। इसलिए वह उसके समीप बैठकर उसकी दुःखद स्थिति को न जान सका।

प्रश्न 4. भगवाना अपने परिवार का निर्वाह कैसे करता था?

उत्तर - भगवाना शहर के पास डेढ़ बीघा भर ज़मीन में कद्दियारी करके उसमें खरबूजों की खेती कर अपने परिवार का जीवन निर्वाह करता था। खरबूजों की डलिया बाजार में पहुँचाकर कभी वह स्वयं सौदे के पास बैठ जाता, तो कभी उसकी माँ बैठ जाती।

प्रश्न 5. लड़के की मृत्यु के दूसरे दिन ही बुढ़िया खरबूजे बेचने क्यों चल पड़ी?

उत्तर - बुढ़िया का एकमात्र कमाऊ बेटा सर्प दंश से मर चुका था।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

घर में जो भी अन्न-धन था वह भगवान की मृत्यु होने पर दान-दक्षिणा व कफ़न में खत्म हो चुका था। बच्चे भूख के मारे बिलाबिला रहे थे। बहू बीमार थी। इसलिए मजबूरी-वश बुढ़िया को खरबूजे बेचने के लिए लड़के की मृत्यु के दूसरे दिन ही बाज़ार में दुकान लगाना पड़ा। कहा भी गया है- "विभूक्षितम् किं न करोति पापम्।"

प्रश्न-6. बुढ़िया के दुख को देखकर लेखक को अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला की याद क्यों आई?

उत्तर- बुढ़िया के दुःख के समान लेखक के पड़ोस की एक संभ्रांत महिला के साथ भी ऐसी ही घटना घटी थी। उसके जवान पुत्र की मृत्यु होने पर वह अढ़ाई-मास तक पलंग से उठ न सकी थी। हर पंद्रह मिनट पर पुत्र-वियोग में उसे मूर्छा आती थी। दो-दो डॉक्टर हमेशा उसके सिरहाने बैठे रहते थे। शहर के सभी लोग उसे देखकर द्रवित हो उठे थे। जबकि बुढ़िया के पास नंगे मृत शरीर को ढकने के लिए कपड़ा भी न था। बुढ़िया की मजबूरी पर लोग ताने कस रहे थे।

इसलिए यह बात सत्य है कि थोड़ा-सा दुःख जहाँ अमीरों को हिला देता है, वहीं बड़ा-से-बड़ा दुःख भी गरीबों को सहज बने रहने पर मजबूर कर देता है।

[ख] निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर (50-60 शब्दों में) लिखिए—

प्रश्न 1. बाज़ार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में क्या-क्या कह रहे थे? अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर- बाज़ार के लोग खरबूजे बेचने वाली स्त्री के बारे में अनेक प्रकार की तिरस्कारपूर्ण बातें कर रहे थे। एक आदमी ने घृणा से एक तरफ़ थूकते हुए कहा, "क्या ज़माना है! जवान लड़के को मरे पूरा दिन नहीं बीता और यह बेहया दुकान लगा के बैठी है।" एक आदमी ने कहा, "ये कमीने लोग रोटी के टुकड़े पर जान देते हैं। इनके लिए बेटा-बेटी, खसम-लुगाई, धर्म-ईमान सब रोटी का टुकड़ा है।" परचून की दुकान पर बैठे लाला जी ने कहा "जवान बेटे के मरने पर तेरह दिन का सूतक होता है और यह सड़क पर दुकान लगा के बैठी है। हजार आदमी आते-जाते हैं। कोई क्या जानता है? कोई इसके खरबूजे खा ले तो उसका ईमान-धर्म कैसे रहेगा?

इस प्रकार अनेक लोग अनेक बातें कह रहे थे। परन्तु कोई भी उस बुढ़िया की मजबूरी को समझना नहीं चाहता था।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न 2. पास-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को क्या पता चला ?

उत्तर- आस-पड़ोस की दुकानों से पूछने पर लेखक को पता चला कि उस बुढ़िया का तेईस-वर्ष का जवान लड़का था। पोता-पोती और उसकी बहू है। लड़का डेढ़ बीघा भर ज़मीन में कढ़ियारी करके खरबूजों की खेती कर परिवार का जीवन निर्वाह करता था।

लड़का मुँह-अँधेरे बेलों में से पके खरबूजे चुन रहा था। तभी गीली मेड़ की तरावट में विश्राम करते हुए एक साँप पर लड़के का पैर पड़ गया, तब साँप ने लड़के को डस लिया और उसकी मृत्यु हो गई।

प्रश्न 3. लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने क्या-क्या उपाय किए ?

उत्तर- लड़के को बचाने के लिए बुढ़िया माँ ने हर संभव प्रयास किया। वह बावली होकर ओझा को बुला लाई। झाड़ना-फूकना हुआ। नागदेव की पूजा हुई। पूजा के लिए दान-दक्षिणा चाहिए। घर में जो कुछ आटा और अनाज था, दान-दक्षिणा में उठ गया। माँ, बहू और बच्चे 'भगवान' से लिपट-लिपट कर रोए, पर भगवान जो एक दफ़े चुप हुआ तो फिर न बोला। सर्प के विष से उसका सब बदन काला पड़ गया था। और अन्त में उसकी मृत्यु हो गई।

प्रश्न 4. लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाजा कैसे लगाया ?

उत्तर- लेखक ने बुढ़िया के दुःख का अंदाजा अपने पड़ोस की संभ्रांत महिला को याद करके लगाया। अमीर लोग अपने दुःख का वर्णन बढ़ा-चढ़ा कर करते हैं। वे बेहोश होने का नाटक करते हैं। कई दिनों तक बिस्तर पर पड़े रहते हैं, अनेक लोगों से सहानुभूति प्राप्त करते हैं जबकि गरीब लोग मौत की परवाह न कर बाहर निकलते हैं। अपने दुःख को हृदय में ही दबा लेते हैं।

ऐसे ही बुढ़िया भी अपने जवान पुत्र की मृत्यु को हृदय में दफ़न कर खरबूजों की दुकान लगा कर बैठ जाती है। दिल शोकाकुल है परन्तु विवशता कार्य करने हेतु मजबूर कर रही है।

प्रश्न 5. इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' कहाँ तक सार्थक है? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- इस पाठ का शीर्षक 'दुःख का अधिकार' पूरी तरह से

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

सार्थक है।
प्रस्तुत कहानी देश में फैले अंधविश्वासों और ऊँच-नीच के भेद-भाव को बेनकाब करते हुए यह बताती है कि दुःख की अनुभूति सभी को समान रूप से होती है। कहानी धनी लोगों की अमानवीयता और गरीबों की मजबूरी को भी पूरी गहराई से उजागर करती है।
यह सही है कि दुःख सभी को तोड़ता है, दुःख में मातम मनाना हर कोई चाहता है, दुःख के क्षण से सामना होने पर सब अवश हो जाते हैं, पर इस देश में ऐसे भी अभागे लोग हैं जिन्हें न तो दुःख मनाने का अधिकार है, न अवकाश ----।

(ग) निम्नलिखित के आशय स्पष्ट कीजिए —

प्रश्न 1. जैसे वायु की लहरें ---------- रोके रहती है।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्तियों के द्वारा लेखक पोशाक के विषय में वर्णन करते हुए कहता है कि जिस प्रकार पतंग को डोर से नियंत्रित किया जाता है और डोर के टूटने के बाद भी हवा पतंग को तुरंत ज़मीन पर नहीं गिरने देती, वह आकाश में ही लहराती रहती है, वैसे ही खास पोशाक के कारण व्यक्ति आसमानी बातें करने लगता है। वह अमीरी का आभास कराती है। गरीबों को बराबर का स्थान नहीं देना चाहता। परिणामतः उसकी स्थिति त्रिशंकु जैसी हो जाती है। वह चाहकर भी गरीबों के दुःख-दर्द में शामिल नहीं हो पाता है।

प्रश्न 2. इनके लिए बेटा-बेटी ------ टुकड़ा है।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति में मजबूर इंसान की लाचारी को बताया गया है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे समाज के द्वारा बनाए गए नियमों, कानूनों एवं परम्पराओं को मानना चाहिए। परंतु मजबूरी व लाचारी सभी नियमों व परम्पराओं को तोड़ने के लिए विवश कर देती है।
इस कहानी में बुढ़िया को घर की मजबूरी फुटपाथ पर खरबूजे बेचने के लिए विवश कर देती है। वह ढिल पर पत्थर रखकर लोगों के ताने सहती है। लोग ताने देते हुए कहते हैं कि इनके लिए बेटा-बेटी पति-पत्नी और धर्म-ईमान सभी कुछ रोटी ही होती है। लोग किसी की विवशता पर हँस तो सकते हैं, परन्तु उसका सहारा नहीं बन सकते। पेट की आग उन्हें दर-दर भटकने के लिए मजबूर कर देती है।

Downloaded from www.studiestoday.com

Downloaded from www.studiestoday.com

प्रश्न 3. शोक करने, गम मनाने - - - - - अधिकार होता है।

उत्तर- प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि आज के इस समाज में दुःख मनाने का अधिकार भी केवल धनी वर्ग को होता है। गरीब व्यक्ति के पास न तो दुःख मनाने की सुविधा है और न समय है। वह तो रोजी-रोटी के ही चक्कर में उलझा रहता है। सम्पन्न वर्ग शोक मनाने का दिखावा करता है वहीं विपन्न वर्ग उसे दिल में ही दफ़न कर अपने दैनिक कार्यों में लग जाता है। पेट की ज्वाला उसे दुखी होने का अधिकार नहीं देती है।

****

Downloaded from www.studiestoday.com